स्वराज की दिशा में भविष्य के शिक्षक

पल्लवी वर्मा पाटिल एवं रोशनी रवि

भाषान्तर : मधुलिका झा

बैंगलोर में शिक्षकों के एक समूह ने वर्तमान समय में नई तालीम के विचार के साथ एक प्रयोग किया। इस प्रयोग के लिए उन्होंने उच्च प्राथमिक स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल भोजन विषय को केंद्र में रखते हुए हाथ से काम करने के अभ्यास और शारीरिक श्रम को जोड़ा। इसे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय और पूर्णा लर्निंग सेंटर के बीच एक सहयोगपूर्ण परियोजना के रूप में परिकल्पित किया गया था। इसे 'दि रागी प्रोजेक्ट' (टीआरपी) का नाम दिया गया। यह परियोजना वर्ष 2017-19 के दौरान लगभग दो सालों तक चली। इस दौरान शिक्षकों ने रागी (मंडुआ) या बाजरे की खेती करने, स्कूल के पास की भूमि में जैविक सब्ज़ियाँ उगाने और खेत व बगीचे से प्राप्त भोज्य पदार्थों को सप्ताह में एक बार सभी के लिए पकाने जैसे कामों में बच्चों को शामिल करके कई शैक्षणिक अवधारणाओं के सीखने-सिखाने पर काम किया।

टीआरपी परियोजना में शामिल सभी शिक्षकों को जैविक खेती करने और भोजन उगाने का कौशल सीखना था। शिक्षकों ने आयु के अनुरूप शैक्षणिक अवधारणाओं को खेती करने के दौरान हाथ से किए जाने वाले कामों से जोड़ने की भी कोशिश की। नई तालीम का यह प्रयोग शिक्षकों से काफ़ी अपेक्षा करता था। शिक्षकों ने भोजन की थीम को केंद्र में रखकर कक्षा के लिए नई विषयवस्तु, कार्यपत्रक, पाठ योजनाएं और कक्षा-भ्रमण की रूपरेखा तैयार की। उन्होंने खेत को तैयार करने के लिए सप्ताहांत और स्कूल के घंटों के बाद भी काम किया; बच्चों को इसमें शामिल करने से पहले खुद जैविक कृषि से संबंधित नए कौशलों और तरीकों को सीखा, न केवल कक्षा बल्कि रसोई और खेत के प्रबंधन और संचालन के लिए भी नई व्यवस्थाओं तरीक़ों को अपनाया; उपयुक्त कक्षा-भ्रमण के अंतर्गत कृषि उपकरणों का इतिहास जानने के लिए किसी संग्रहालय की यात्रा, जैविक खेत से लेकर एक स्थानीय रागी प्रसंस्करण मिल तक का भ्रमण, एक बीज बैंक की

यात्रा, और कीटों की प्रदर्शनी जैसे अनेक शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन किया गया। मौजूदा शैक्षणिक समय सारिणी और शिक्षण के काम के दायरे में रहते हुए शिक्षकों ने इस परियोजना के लिए अतिरिक्त मेहनत की।

गाँधीजी ने खुद उल्लेख किया है कि नई तालीम पर काम करने वाले शिक्षकों की पहली पीढ़ी से उन्हें कितनी अपेक्षाएं थीं- **"हमें ऐसे शिक्षकों की ज़रूरत है जो मौलिक हों और उत्साह से लबरेज हों; जो हर दिन यह विचार करेंगे कि वे अपने विद्यार्थियों को क्या पढ़ाने वाले हैं। शिक्षक को यह ज्ञान भारी-भरकम किताबों से नहीं मिल सकता है। उसे अवलोकन और चिंतन की अपनी स्वयं की क्षमताओं का उपयोग करना होगा और शिल्प की सहायता से, संवाद के माध्यम से अपने ज्ञान को बच्चों तक पहुँचाना होगा।"** (सेवाग्राम, 1939) इसीलिए आज के समय में भी नई तालीम को पुनर्जीवित करने के लिए शिक्षकों का उत्साह और सीखने-सिखाने की नई संभावनाओं को तलाशने की रचनात्मकता बेहद अहम है। इसके अलावा, इस तरह की शिक्षा में शिक्षकों को एक-दूसरे के शिक्षण के तरीक़ों को आपस में सीखने की आवश्यकता होती है। यह लेख 'द रागी प्रोजेक्ट' (टीआरपी) में भाग लेने वाले शिक्षकों के अनुभवों की छानबीन करता है। आलेख पाँच शिक्षकों- रोशनी रवि (आरआर) जो मिडिल स्कूल में सामाजिक विज्ञान और भाषा पढ़ाती थीं; समिता श्रीवत्स (एसएस) जिन्होंने मिडिल स्कूल में सामाजिक विज्ञान पढ़ाया; वसंत कुमारी (वीके) जो मिडिल और हाई स्कूल में विज्ञान पढ़ाती थीं; अश्विनी पाटिल (एपी) जो भाषा शिक्षक होने के साथ स्कूल की रसोई की गतिविधियों की समन्वयक रहीं और जलज अम्बा देवी (जेएडी) जिन्होंने स्कूल में कन्नड़ भाषा और शिल्प कार्य सिखाया, के साथ हुई बातचीत को समेकित करता है।

खेत बने कक्षा : सीखने-सिखाने की नई परिकल्पना

1. रागी परियोजना में आपकी रुचि कैसे हुई? किन बातों ने आपको परियोजना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया?

रोशनी रवि : यह परियोजना सीखने और बढ़ने के अवसर की तरह सामने आई। मैं कुछ अलग करना चाहती थी, कुछ ऐसा जो मेरे कक्षा शिक्षण को एक नई दिशा दे सके। मैं भोजन और परिवेश में निकलने वाले अपशिष्टों को लेकर कुछ करना चाहती थी और साथ ही कुछ ऐसा जो मुझे अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में आगे बढ़ने लिए प्रेरित करे।

समिता श्रीवत्स : स्कूल में नई शिक्षिका के रूप में अपने पहले ही दिन मैं रागी के खेतों में गई, वहाँ की ऊर्जा और उत्साह को देखना रोमांचक था। शिक्षकों और छात्रों के साथ स्कूल के दिन का पहला घंटा खेतों में बिताना बहुत अच्छा अनुभव था! मेरे लिए यह परियोजना हाथों से काम करने की कुशलता को समझने का एक तरीक़ा था, और खेती का काम एक तरह से हमारे शरीर को प्रशिक्षित कर रहा था।

वसंत कुमारी : खुद कृषक समुदाय से होने के कारण खेती को खुद करके सीखने का अवसर मेरे लिए खुशी भरा क्षण लेकर आया। मैंने खुद कभी भी खेती के काम और फसल के उत्पादन चक्र को शुरू से अंत तक नहीं देखा था और यह जानना सचमुच अद्भुत था कि इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में जगह मिल सकती है।

अश्विनी पाटील : परियोजना के बारे में सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। मैंने बचपन से ही अपने परिवार को खेती करते हुए देखा है। मुझे खुशी हो रही थी कि हमें इसे स्वयं करने का मौका मिला है। यह एक बेहतरीन अवसर था कि हम बच्चों को भोजन का मूल्य, खेती करने और अपने भोजन को उगाने में लगने वाली मेहनत और भोजन के

अपव्यय के बारे में सिखा सकें ताकि वे इस पूरी प्रक्रिया से परिचित हों और इसकी सराहना कर सकें। शहरी बच्चे सोचते हैं कि दूध प्लास्टिक के पैकेट से आता है!

जलज अम्बा देवी : मेरे रोज़मर्रा के भोजन में रागी हमेशा शामिल होता है। इसलिए, मैं बीज से लेकर भोजन की थाली तक रागी के आने की पूरी यात्रा में शामिल होना चाहती थी।

2. रागी परियोजना का हिस्सा बनने के अनुभव ने आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास यात्रा को किस तरह से प्रभावित किया है? क्या इससे एक शिक्षक के रूप में आप में कुछ बदलाव आए? क्या इसने आपके व्यक्तिगत जीवन और पसंद-नापसंद को प्रभावित किया है?

रोशनी रवि : इस अनुभव ने एक शिक्षक के रूप में मेरे काम के तरीक़ों और मेरी पहचान के साथ ही वर्तमान समय में पर्यावरणीय चुनौतियों पर काम करने वाले व्यक्ति के तौर पर मुझे कहीं गहरे तक प्रभावित किया है। मैं कक्षा से बाहर अपने परिवेश में काम करने की संभावनाओं और अनुभव से सीखने के महत्व को प्रत्यक्ष रूप से देख पा रही थी। मैं खेतों और अपनी कक्षा के बीच सार्थक जुड़ाव बना पाने में सक्षम थी। मैं विभिन्न प्रकार के ज्ञान और शिक्षा के महत्व को समझ पा रही थी और मैंने इन्हें साथ जोड़ने की कोशिश शुरू कर दी थी। इस अनुभव ने शिक्षण प्रक्रिया के दौरान सामने आने वाले कई सवालों से जूझने के लिए मुझे प्रेरित किया। एक शिक्षक के रूप में, इसने वास्तव में मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि विकल्प और समाधान पेश करने के साथ-साथ अपने छात्रों को कैसे दुनिया की वास्तविकताओं से रू-बरू कराया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि रागी परियोजना (वर्तमान परिस्थितियों में उपजी) निराशा और बेबसी को एक करारा जवाब है- यह मेरे लिए आशा, जुझारूपन और मज़बूती का प्रतीक है, ठीक उसी तरह जैसे बाजरा रागी जो खेतों में मज़बूती से खड़ा रहता है!

समिता श्रीवत्स : व्यक्तिगत रूप से मुझे ऐसा लगा कि भोजन के बारे में मैंने पहले कभी इस तरह से नहीं सोचा था। एक उपभोक्ता के रूप में मेरी पसंद-नापसंद बदल गई है। हम घर पर क्या पकाते और क्या खाते हैं अब मैं इस बारे में सोचती और चिंतन करती हूँ। खेती में जो अपनी एक लय होती है उसने मेरे अंदर के शिक्षक और नृत्यांगना दोनों को आकार दिया है। मुझे किसान के शरीर की गतियों को अलग तरह से देखने-समझने का मौका मिला- एक किसान कैसे उकड़ूँ होकर नीचे बैठता है; चलता है; कैसे प्रयासहीन तरीके से अपने उपकरणों को काम में लेता है। एक कलाकार के रूप में मैं इस परियोजना से मिले सांस्कृतिक अनुभवों- फसल के उत्पादन का उत्सव मनाने के लिए लोक गीतों और स्थानीय थिएटर समूहों को इस परियोजना में शामिल करने के प्रयास की सराहना करती हूँ। मैंने यह समझना शुरू किया कि हमारा शरीर हमारे परिवेश का ही अभिन्न अंग है।

वसंत कुमारी : अपने सीखने-सिखाने के तरीक़े को परखने के लिए मेरे पास दो कार्यक्षेत्र थे- खेत और कक्षा। मैंने अपने बुनियादी कृषि कौशल और स्थानीय ज्ञान को शिक्षण में शामिल करने के तरीक़ों पर काम किया। मैंने यह भी समझा कि सिर्फ एक रूमानी ख़्याल रखने की बजाय उसे एक अच्छी योजना में कैसे बदला जाए। और यह भी कि व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से कैसे सह-संबंधों का अनुमान लगाया जाए। इस दौरान हम बहुत से विचारों पर काम कर रहे थे, उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो उपयुक्त नहीं थे और उनके विकल्पों की तलाश में हमने कई चीजों को पढ़ने, सुनने और देखने पर काम किया। आपसी संवाद की इस प्रक्रिया से मेरे अंदर का आत्मविश्वास काफ़ी बढ़ा। एक शिक्षक के रूप में मेरी पहचान और अधिक मज़बूत हो गई। यह परियोजना काफ़ी अधिक समय की माँग करती

थी, लेकिन मैंने कभी थकान महसूस नहीं की क्योंकि मैं अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचान पा रही थी।

अश्विन पाटील : अब लगभग दो साल हो रहे हैं जब हमने इस काम को पहली बार शुरू किया था, लेकिन मैं अब भी अपनी कक्षाओं में खेती के अनुभव के बारे में बात करती हूँ। बच्चे भी इस अनुभव को याद करते हैं। मैंने पाठ्यक्रम में पौधों, खेती की प्रक्रियाओं और बीजों के बारे में नई सामग्री को शामिल किया है। मैंने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में, यहाँ तक कि खेतों में भी, बच्चों को शामिल करने के अधिक रचनात्मक तरीक़ों के बारे में सोचने की कोशिश की। मैंने सीखा कि विभिन्न विषयों के बीच कैसे जुड़ाव बनाया जाता है। रागी की पहली फ़सल के बाद, जब हमने पोंगल मनाया तो हमने इस बारे में चर्चाएँ कीं कि क्यों यह किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण उत्सव रहा है, हमने गाने गाए और वह माहौल लगभग दिवाली का आभास दे रहा था! व्यक्तिगत रूप से, हमने अपने घर पर भोजन में रागी का अधिक उपयोग करना शुरू कर दिया, और इसका उपयोग करके कई नए व्यंजनों को बनाने की कोशिश की। मैंने बचपन में अपने पिता के साथ खेती की प्रक्रियाओं को केवल देखा भर था, लेकिन कभी सीधे भाग नहीं लिया। इस अनुभव के बाद मैं अपने जीवन में कृषि कार्य की तरफ वापस लौटना चाहूँगी। इस परियोजना ने रिटायर होने के बाद मुझे क्या करना चाहिए इसका एक उद्देश्य दे दिया है। इससे मुझे यह भी एहसास हुआ कि खेती का काम कठिन तो है लेकिन इसे करना संभव है।

जलज अम्बा देवी : इस परियोजना ने संभावनाओं के नए दरवाज़े खोले हैं और मुझे प्रेरित किया कि भविष्य में मैं अपने खुद के खेत होने पर विचार करूँ। एक शिक्षक के रूप में अपने शिक्षण पाठ्यक्रम में रागी को शामिल करने के नए तरीके खोजने में मुझे काफ़ी आनंद आया।

3. आपके अनुसार इस परियोजना की कुछ मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

रोशनी रवि : छात्रों, शिक्षकों, सहायक कर्मचारियों, स्कूल प्रबंधन, माता-पिता, स्थानीय किसानों, कलाकारों, और वैज्ञानिकों जैसे कई लोगों का अलग-अलग समय पर इस काम के लिए एक साथ जुड़ना निश्चित रूप से इस परियोजना का एक अद्भुत अनुभव था। मैं इसे बहुत क़रीब से समझ और अनुभव कर पा रही थी कि इस काम को करने के लिए कितने अलग-अलग लोगों और उनके विविध अनुभवों व विशेषज्ञता की ज़रूरत होती है। किसी जश्न के लिए दो सौ से अधिक रागी लड्डू बनाने से लेकर खेत भ्रमण के लिए ज़रूरी व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करना जैसे सभी काम आपसी समन्वय पर निर्भर करते हैं। बच्चों को खेतों में देखना, उन जगहों को लेकर आपसी बातचीत, एक-दूसरे से सीखना, छोटी-छोटी खोज करना जैसे कई छोटे-बड़े अनुभव थे, जिन्होंने मुझे और मेरे साथी शिक्षकों को प्रेरित किया।

समिता श्रीवत्स : सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैंने महसूस की वह यह थी कि खेतों में काम करते हुए बच्चों में आपस में भेद नहीं रह जाता और वे दूसरों को और उनके हुनर को सम्मान देना सीखते हैं।

वसंत कुमारी : मुझे कभी नहीं लगा कि मैं कक्षा में अकेली हूँ; वहाँ हमेशा 'समुदाय' का भाव था। वहाँ किसी 'सफलता' को हासिल करने का कोई दबाव नहीं था बल्कि पूरा नज़रिया ही यह था, 'आइए, इसे मिलकर करते हैं।' यहाँ तक कि अगर कोई तरीक़ा काम नहीं करता था तो भी हम उसे आसानी से बता और स्वीकार पाते थे। हम बहुत सारे लोगों के ज्ञान जैसे- सामान्य लोग, स्थानीय किसान, यहाँ तक कि मेरे किसान पिता के अनुभवों को भी काम में ले रहे थे! इसके अलावा, खेती के नए और स्थायी तरीक़ों को परखने के साथ ही मिट्टी को उर्वर बनाने और पौधों के विकास को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक तरीक़ों को वापस आज़मा रहे थे।

अश्विनी पाटील : इस प्रोजेक्ट से पहले मुझे रागी का अंग्रेजी नाम नहीं पता था। फसल पकने के बाद जब मैंने उसे क़रीब से देखा तो लगा कि 'फिंगर मिलेट' नाम इसके लिए एकदम सटीक है! मुझे रागी का उपयोग करके नए व्यंजन बनाने में मज़ा आया और साथियों ने मुझे ऐसे प्रयोग करने के लिए न केवल प्रेरित किया बल्कि सहयोग भी दिया। वह मेरा पसंदीदा समय है जब हमने साथ में बुआई करके इसकी शुरुआत की थी, हमने मिलकर सब कुछ किया। इस पूरी परियोजना के दौरान हमेशा खुशनुमा माहौल रहा, हर पल खुशी से भरा था- ऐसे किसी एक या दो क्षणों को चिह्नित कर पाना बहुत कठिन है।

जलज अम्बा देवी : मुझे बच्चों के साथ काम करने में, अपने भोजन में रागी का उपयोग करने के तरीक़ों को खोजने और उसे पकाने में बहुत मज़ा आया। यह देखना बहुत अच्छा था कि कैसे पूरी परियोजना के दौरान इससे जुड़ा हर व्यक्ति सकारात्मक रहा और इसके हर पल का आनंद लिया।

4. व्यक्तिगत तौर पर और शिक्षकों के एक समूह के रूप में आपने किस तरह की चुनौतियों का सामना किया?

रोशनी रवि : खेत और खेती के काम के साथ संबंध बनाने में छात्रों की मदद करना चुनौतीपूर्ण था, अचानक लंबे समय तक कक्षा से बाहर खेतों में रहना एक ऐसा बदलाव था जिसका उन्हें अभ्यस्त होना था। कृषि कार्य की अनिश्चितता को स्वीकारना और कक्षा में उस अनिश्चितता के विचार का सामना करना भी एक चुनौती थी। हमें अक्सर तत्काल सोचना होता था, उदाहरण के लिए- भूगोल में हमने क्या किया और खेत में क्या हो रहा था, इन दोनों के बीच एक जुड़ाव को देखना और समझना! प्रायः शिक्षकों को अतीत के अनुभवों को कक्षा में लाना होता था; बचपन के अनुभव, कहानियाँ, गीत और कला इस ज्ञान को साझा करने के महत्वपूर्ण साधन/उपकरण और माध्यम थे।

समिता श्रीवत्स : मुझे लगता है कि परियोजना से जुड़े सभी लोगों को समावेशी होने का एहसास कराना एक अहम चुनौती थी। सभी छात्रों में उत्साह और सहयोग के भाव को बनाकर रखना भी एक अच्छी चुनौती थी। एक शिक्षक के रूप में कुछ बच्चों को उदासीन देखना कठिन था, लेकिन मैंने महसूस किया कि मुझे उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कुछ नए तरीके खोजने होंगे।

वसंत कुमारी : पाठ योजनाओं को बनाने और अपने काम के बारे में लिखने के अलावा एक साथ काम करते हुए साथियों की असहमति को सम्मान देना (असहमत होने के लिए सहमत होना) सीखना मेरे लिए वास्तव में चुनौतीपूर्ण था।

अश्विनी पाटील : कई बार मुझे लगा कि इस तरह के सीखने-सिखाने के तरीक़े को स्कूल प्रबंधन द्वारा अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। मुझे यह भी लगता था कि क्या हम बच्चों को खेती की वास्तविकताओं की पूरी तस्वीर दे पाने में सक्षम हो पाएंगे?

जलज अम्बा देवी : एक शिक्षक के लिए हर दिन चुनौती से भरा होता है। रागी परियोजना के दौरान हम सभी का ध्यान नई तकनीकों को सीखने और उसके हर पल का आनंद लेने पर केंद्रित था। हालाँकि कभी-कभी किसी तय काम को पूरा करना कठिन होता था। कुछ छोटे बच्चों की रुचि नहीं रह जाती थी। कभी-कभी किसी एक बात पर सहमति बनाने में समय लगता था, लेकिन इन सारे उतार-चढ़ाव के बावजूद हमने इस पूरी प्रक्रिया का आनंद लिया।

5. आपको क्या लगता है कि आज दुनिया में 'दि रागी प्रोजेक्ट (टीआरपी)' जैसी परियोजना की क्या भूमिका है?

रोशनी रवि : मुझे लगता है कि इस तरह की परियोजनाएं महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे छात्रों और शिक्षकों के संसार और दृष्टिकोण को विस्तृत बनाते हैं। रागी परियोजना में काम में ली गई शिक्षण पद्धति और दृष्टिकोण के साथ परिवेश की कोई भी जगह शिक्षण-कक्ष का काम कर सकती है, जहाँ रोज़मर्रा की गतिविधियों से ही सीखने-सिखाने के कई अवसर सामने आ सकते हैं; और ऐसा होना छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को स्कूलों में सीखे और सिखाए जाने वाले ज्ञान के औचित्य को समझने का अवसर देता है। ये जीवन को बदलने वाले अनुभव हैं जिनसे मिली सीख हमारे जीवन का हिस्सा हो जाती है और वह हमारे निर्णय लेने और जीवन विकल्पों, जैसे कि हम अपने भोजन की थाली के लिए क्या चुनेंगे, को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

समिता श्रीवत्स : हमने तमिलनाडु के पुवीधाम स्कूल नामक एक अन्य वैकल्पिक स्कूल का भ्रमण किया था। उस स्कूल के पाठ्यक्रम में भी खेती को शामिल किया गया है। जब उनकी संस्थापक ने कहा कि उनका इरादा बच्चों को ऐसे भविष्य के लिए तैयार करने का है जब भोजन का उत्पादन करना सबसे महत्वपूर्ण कौशल होगा। उस क्षण में हमने रागी परियोजना को भविष्य के परिप्रेक्ष्य में देखा। मुझे लगता है कि वर्तमान में बच्चे और वयस्क हम सभी समस्या को सुलझाने के बारे में सोचते हैं, लेकिन यह सबसे अच्छा विकल्प नहीं हो सकता। हमें रोकथाम की बजाय समस्या को जड़ से समाप्त करने के बारे में सोचना चाहिए। मुझे इसके पक्ष में तर्क करने में कठिनाई आती थी। जब भी कोई समस्या आती तो बच्चे भी दिल्ली के वायु प्रदूषण, स्मॉग-एयर प्यूरीफायर (वायु शोधक यंत्रों), मास्क आदि की बात करते थे। लेकिन इस तरह की समस्याओं के बारे में सोचने के साथ-साथ यह सोचना कि हम अपने-आप को और अपने जीवन जीने के तरीक़े को किस तरह से बदल सकते हैं- इस नए नज़रिए ने बच्चों को उनके आस-पास की पर्यावरणीय संबंधी समस्याओं पर विभिन्न तरीक़ों से सोचने का अवसर दिया और साथ ही उन्हें इन मुद्दों को समझने का मार्ग सुझाया।

वसंत कुमारी : आज की दुनिया में हर चीज की रफ़्तार काफ़ी तेज़ है, लेकिन इस तरह की परियोजना और माहौल आपको तेज़ भागना नहीं, बल्कि ठहरकर चलना सिखाते हैं। अगर हम विकास करना चाहते है और दुनिया का अनुभव लेना चाहते हैं तो हमें धैर्य और संयम रखना सीखना होगा। यह हम सभी को भोजन और उसकी उत्पादन प्रक्रिया को महत्व देना भी सिखाता है। अगर आप भोजन उगाने के प्रयास में लगने वाले श्रम को समझते हैं, तो भोजन की

बर्बादी अपने आप कम हो जाएगी। भोजन के साथ आपका ऐसा संबंध प्रकृति का पोषण करने में मददगार होगा और खेती इस रिश्ते की एक अभिन्न कड़ी बन जाती है। ऐसी परियोजना खेती के क्षेत्र में नए रास्तों, अवसरों के द्वार खोलती है, और इस तरह के काम के बारे में कई मिथकों को तोड़ती है। इसने मुझे याद दिलाया है कि 'मुझे अपनी ज़मीन की देखभाल करनी चाहिए!' कोई भी शिक्षक जो खुद को और निपुण बनाना चाहता है, उसे इस तरह के कामों में भागीदारी करनी चाहिए और इस तरह के कार्य में शामिल होना भी अपने-आप में एक तरह की सफलता है। इसके अलावा, मुझे लगता है कि मिट्टी सीखने का सबसे अच्छा माध्यम है, आप मिट्टी के साथ धोखा नहीं कर सकते हैं।

अश्विन पाटिल : मैं मानती हूँ कि शहरी स्कूलों में खेती करना बहुत व्यावहारिक नहीं है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह भी ज़रूरी है कि सभी अपने आस-पास के वातावरण को महत्व दें। मेरे परिवार में हमारे पास भी खेत हैं लेकिन हमारे बच्चे खेती के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। यहाँ तक कि एक किसान का बच्चा भी कृषि के काम का अनादर कर रहा है। इन हालातों को जानने और समझने के साथ ही हर काम में लगने वाले श्रम का आदर करना बहुत ज़रूरी है। इस तरह की परियोजनाएं हम शिक्षकों और बच्चों को व्यावहारिक कौशल सीखने का अवसर देती हैं। मुझे लगता है कि यह तनाव के स्तर को भी कम करता है। जब बच्चे खेतों में अपनी उगाई फसल, उसके फूल, फल, पत्तियों आदि को देखते हैं तो वे काफ़ी खुश रहते हैं!

जलज अम्बा देवी : इस तरह की परियोजना हमें याद दिलाती है कि हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए, साथ ही यह बेहतर खेती व खाने की स्वस्थ आदतों और आहार के प्रति जागरूकता लाने का काम करती है।

6. क्या आप जलवायु परिवर्तन और दुनिया की अन्य परेशानियों के जवाब में इसे एक प्रतिक्रिया के तौर पर देखते हैं? इस परिप्रेक्ष्य में भविष्य की शिक्षा कैसी होनी चाहिए? और भविष्य के शिक्षक कैसे होंगे?

रोशनी रवि : मुझे लगता है कि टीआरपी जैसी परियोजनाएं, जो स्थानीय स्तर पर संचालित होती हैं लेकिन जिनकी परिकल्पना व्यापक है, वे इस बात को सुनिश्चित करने के लिए अहम हैं कि हमारे वृत्तांत समाधान-केंद्रित और व्यवहार में ला पाने योग्य हों। बच्चे दुनिया में तेज़ी से आ रहे बदलाव को अनुभव कर पा रहे हैं क्योंकि हम वयस्क अक्सर निराशा में रहते हैं। ऐसे में हमें छात्रों को केवल डर और क्रोध के साथ अकेला छोड़ने की बजाय सामने आई समस्याओं के समाधान का रास्ता तलाशना चाहिए। छोटे समुदायों जैसे स्कूल में इस तरह के अवसर निश्चित रूप से समाधान का हिस्सा हैं, क्योंकि ये बच्चों के सीखने को और वे अपना जीवन कैसे जिएंगे इसे एक अर्थ दे रहे हैं। मुझे लगता है कि भविष्य में सीखने-सिखाने में स्थानीय ज्ञान को प्राथमिकता मिलेगी और यह ज़मीन व समुदाय से जुड़ा हुआ होगा। शिक्षा के केंद्र को 3 आर (रिड्यूजस, रीयूस और रीसाइकिल) से हटाकर 3 एच (हेंड, हार्ट और हैड) में स्थानांतरित करना होगा, जिसमें सीखा गया हुनर सीधे तौर पर लोगों को संपूर्ण, और आत्मनिर्भर जीवन जीने में मदद करता है। भविष्य के शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करना अहम होगा कि वे ज़मीन से और उन समुदायों से जुड़े हों जहाँ वे काम करते हैं।

समिता श्रीवत्स : मुझे पता है कि आज हम स्कूलों में जो भी कर रहे हैं वह सब कुछ लंबे समय तक काम नहीं करने वाला है। एक बात जो मैंने सीखी, वह यह है कि खुद को और बच्चों को किसी नई बात को समझाने में बहुत समय लगता है। हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहाँ हमारा व्यवहार पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए हम त्वरित परिवर्तन या न्याय या बलपूर्वक बात मनवाने की उम्मीद नहीं कर सकते। लेकिन यह एक चुनौती है कि कैसे बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती के इन बातों को आत्मसात कराया और समझाया जाए कि त्वरित कदम उठाने के साथ ही

परिवर्तन के लिए आवश्यक समय की माँग के बीच इस संतुलन को हम कैसे हासिल करें। भविष्य का शिक्षक वह होगा जो चिंतनशील और संवेदनशील हो, जो बातों को सही परिप्रेक्ष्य में देख सकता हो और जिसे स्थानीय ज़रूरतों की समझ हो।

वसंत कुमारी : भावी शिक्षक को आस-पास की घटनाओं से अवगत और जागरूक होना चाहिए। उसे सीखे हुए को भूलने के लिए तैयार रहना होगा, प्रयोग करने के लिए तत्पर रहना होगा, और अपने शिक्षण पर चिंतन करना होगा। उसे साथी शिक्षकों के साथ आपसी सहयोग से सीखने में रुचि होनी चाहिए।

अश्विन पाटील : भावी शिक्षक वे होंगे जो स्वयं के लिए भोजन का उत्पादन करने और उसका उपभोग करने में आत्मनिर्भर होने का प्रयास करेंगे। बच्चे अपने शिक्षकों का अनुसरण करते हैं, उनकी कही गई बातों को मानते हैं, इसलिए हमारी कथनी और करनी में समानता होनी चाहिए। हमें अपने विचारों और कार्य के बीच समन्वय बनाए रखने की ज़रूरत है। भविष्य के शिक्षक को लोगों की सोच को बदलने के क्रम में स्वयं के भोजन के चुनाव के बारे में भी विचार करना होगा। खेती करना, अपना भोजन पकाना महत्वपूर्ण कौशल है। बच्चों को पता है कि ज़मीन केवल भवन निर्माण के लिए ही नहीं है, उसमें और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। यह उन्हें भूमि पर पेड़ लगाने के पीछे के उद्देश्य को समझने और पर्यावरण के अनुकूल तरीकों से अपनी भूमि की देखरेख करने में सक्षम बनाता है।

जलज अम्बा देवी : यह जरूरी है कि बच्चे इस बात इस बात से अवगत हों कि उनका भोजन कहाँ से आता है। इस तरह की परियोजनाएं एक छात्र की सोच को विस्तार देती हैं जिससे उनके सामने नए विकल्प खुलते हैं और उनकी क्षमताओं में वृद्धि होती है। परियोजना के अंत में कुछ बच्चों ने बताया कि खेतों में काम करना कैसे उन्हें ताज़गी से भर देता था और कुछ ने यह भी कहा कि अगर संभव हुआ तो वे इसे व्यवसाय या शौक के रूप में आगे भी अपनाना चाहेंगे। रागी परियोजना के माध्यम से इसमें शामिल सभी लोग छोटे पैमाने पर की जाने वाली जैविक खेती के मुद्दों के साथ जुड़ पाए। इसने शिक्षकों को यह महसूस कराया कि वे अपने और समाज के लिए कुछ सार्थक काम करने के बड़े उद्देश्य से जुड़े हुए हैं। इसने शिक्षकों को औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में हाथ से काम करने के बारे में अपनी सोच पर चिंतन करने और अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं पर सवाल उठाने का अवसर दिया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इस परियोजना के माध्यम से शिक्षकों ने शिक्षा को बदलाव लाने की प्रक्रिया के तौर पर देखना सीखा।

ई. डब्ल्यू. आर्यनायकम ने आशा देवी के साथ सेवाग्राम में पहले नई तालीम स्कूल की शुरुआत की और वर्धा में बुनियादी तालीम का पहला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित किया। उन्होंने 19 मार्च 1954 को गुजरात में नई तालीम के सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था:

''किसी ने कभी यह दावा नहीं किया है कि नई तालीम आसान है। यह सतत और उच्च स्तर की शारीरिक ऊर्जा, मानसिक विद्वत्ता व जुझारूपन और आध्यात्मिक बल की माँग करती है। लेकिन एक बात को लेकर नई तालीम के सच्चे शिक्षक आश्वस्त होते हैं और वही उनका पुरस्कार होगा। वह है सहज मानवीय रुचि पर आधारित शिक्षण

को लेकर बच्चों की प्रतिक्रिया और इस तरह सीखने की उनकी प्रेरणा और उत्साह। चुनौती और अवसर से भरे ऐसे दिन हमें नए प्रयासों के लिए प्रेरित करते रहें।''

साठ साल के बाद भी ये शब्द सच प्रतीत होते हैं!

**लेखक सभी बच्चों, शिक्षकों और स्कूल समुदाय को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अपने समय, प्रयास और उत्साह से नई तालीम की इस यात्रा को एक अनूठे सार्थक अनुभव में बदल दिया। हमें उम्मीद है कि रागी परियोजना से मिले हमारे अनुभव हमेशा स्कूल के भोजन संबंधी संवादों का हिस्सा बने रहेंगे और हमारे भोजन की पसंद-नापसंद को प्रभावित करते रहेंगे। ◆

पल्लवी वर्मा पाटिल : 2013 से अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के विकास स्कूल संकाय में कार्यरत हैं। वे 'आज और कल के लिए नई तालीम', 'लिविंग यूटोपिया', 'फूड एंड न्यूट्रिशन इन एक्शन' शीर्षक वाले पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। वह युवा वयस्कों के लिए गाँधी रीडर की सह-लेखिका हैं।

भोजन के इर्द-गिर्द पल्लवी की सक्रियता में फूड एंड आइडेंटिटी नामक एक कार्यशाला-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है, जो शिक्षकों के एक नेटवर्क का समन्वय करता है जो भोजन के माध्यम से पढ़ाते हैं। वे *दि रागी* प्रोजेक्ट नामक एक शहरी स्कूल में एक कृषि परियोजना का समन्वय करती हैं।

संपर्क : pallavi.vp@apu.edu.in

रोशनी रवि : रोशनी रवि टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई में परामर्श मनोविज्ञान की शिक्षिका हैं। उन्होंने पेरी-अर्बन बैंगलोर के एक वैकल्पिक स्कूल में भाषा, पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका के रूप में काम किया है। फिलहाल नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन के एजुकेशन एंड पब्लिक एंगेजमेंट प्रोग्राम से जुड़ी हुई हैं।

संपर्क : ravi.roshni90@gmail.com

संदर्भ :

प्रकाश वेद, (1985), गाँधीयन बेसिक एजुकेशन एज ए प्रोग्राम ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी इंस्ट्रक्शन एट द एलीमेंटरी स्टेजः सम लेसन्स ऑफ एक्सपीरियंस, यूनेस्कोः पेरिस।

दावा अस्वीकरणः इस साक्षात्कार में व्यक्त विचार भागीदार शिक्षकों के अपने/व्यक्तिगत विचार हैं। वे परियोजना में शामिल संस्थानों- अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय या पूर्णा लर्निंग सेंटर के दृष्टिकोण या विचारों को नहीं दर्शाते हैं।